14

धन से बर्बाद हुए (5:1-6)

आपको ओहायो के उस आदमी की खबर पढ़ना याद है, जो इंटर-स्टेट की ओर जा रहा था, जब उसकी बख्तरबंद कार के दरवाज़े उसके सामने खुल गए और हाईवे पर धन की बरसात होने लगी थी? अनुमान लगाया गया था कि हाईवे पर 20 लाख डॉलर से अधिक उड़ गए थे और इस एक आदमी ने रुक कर $ 1,50,000 से अधिक उठा लिए थे। अद्‌भुत हवाई ख्यालों और अपने विवेक से जूझने के लगभग आधा घण्टा बाद इस आदमी ने बख्तरबंद कार कंपनी को धन लौटा दिया। इस प्रतिक्रिया ने देश को स्तब्ध कर दिया और बहुतों को वह आदमी अजीब और मूर्ख लगा। वास्तव में यह इतना अजीब था कि यह नेशनल इन्ककुआयटर के पहले पन्ने पर प्रमुखता से छपा। जॉनी कार्सन ने तो उसे यह सब बताने के लिए अपने शो में भी बुलाया।

मेरा निजी विचार है कि हमारे समाज में धन के लिए उन सब चीज़ों के लिए जो धन से खरीदी जा सकती हैं, जुनूनी सा है। इतना धन, जो इतनी जल्दी और इतनी आसानी से मिला हो, त्याग देने वाले आदमी से हम प्रभावित होते हैं, यह सच है क्योंकि हम उस समाज में रहते हैं, जहां किताबों की दुकानें जल्द अमीर बनने की योजनाएं बताने वाली किताबों से भरी रहती है और यहां टेलीविज़न अमीर और प्रसिद्ध लोगों की जीवनशैली से फंसाता है। यह मानसिकता हम सबको प्रभावित करती है, क्योंकि हम में से कौन है, जिसने दिन में ख्वाब न देखा हो कि ''पब्लिशर्स क्लीयरिंग हाउस स्वीपस्टेक्स'' में एक करोड़ डॉलर का पहला इनाम निकल आए तो मज़ा आ जाए?

पवित्र शास्त्र को ध्यान से पढ़ने पर संकेत मिलता है कि दौलत पाप नहीं है अब्राहम बहुत ही दौलतमंद आदमी था, और वह परमेश्वर के साथ चलता था। बाइबल बताती है कि भौतिक सम्पत्तियां हमें दी गई हैं। अपने जीवनों में समझदारी से उनके इस्तेमाल के लिए परमेश्वर के लिए हमारी सेवा करने में और अपने साथी लोगों की सेवा करने में।

हमारे वचन पाठ याकूब 5:1-6 में दिखाया गया है कि धन हमारे साथ क्या कर सकता है। याकूब अपने आपको धनवान से सम्बोधित करवाता है, और सम्पत्ति के उपयोग और दुरुपयोग पर कहने के लिए उसके पास कुछ स्पष्ट बातें हैं। केवल एक प्रश्न खड़ा होता है कि ये धनी लोग विश्वासी हैं या नहीं। कई लेखक इन आयतों को उस स्थान के रूप में देखते हैं, जहां याकूब सुनने वालों को बदलकर धनवान काफ़िरों में बदल देता है। मेरा अपना मानना है कि याकूब अभी भी विश्वासियों से बात कर रहा है। इसके कई कारण हैं कि मैं ऐसा क्यों मानता हूं। पहले तो याकूब की सोच में धनवान और निर्धन की समस्या बहुत बड़ी है (1:9-11; 2:1-13; 4:13-17)। फिर याकूब के लिखने के ढंग से स्पष्ट है कि वह उन धनी लोगों से उसकी पत्री के पढ़े जाने के समय उपस्थित रहने की उम्मीद करता है। यदि हमें पक्का नहीं है कि ये धनवान मसीही ही हैं तो हम इनमें से किसी भी निन्दा को अपने लिए कैसे मान सकते हैं?

उन लोगों के साथ, जिन्होंने धन जमा कर रखा है, हमारा सामना करते हुए, याकूब हम सब को उन सब संसाधनों के बारे में बताता है जो परमेश्वर ने हमें सौंपे हैं। इन कठोर डांटों को

दिखाकर वह हमें सिखाता है कि हम परमेश्वर के साथ विनम्रता पूर्वक चलने में एक औज़ार के रूप में अपनी भौतिक सम्पत्ति का इस्तेमाल कैसे करें।

धनवानों को मन फिराव के लिए कहना (5:1)

जब याकूब 5:1 कहता है, ''हे धनवानो सुन तो लो; तुम अपने आने वाले क्लेशों पर चिल्लाकर रोओ,'' तो वह मन फिराव की पुकार जारी कर रहा है। वह उन मसीही लोगों को डांटता है जिन्होंने अपने हृदय और मनों को मोड़ने के लिए आर्थिक शक्ति और भौतिक सम्पत्ति को अनुमति दे दी है।

मन फिराव की इस पुकार में, याकूब उन्हें बताता है कि यदि उन्हें अपनी आने वाली हालत पता चल जाए तो वे ''चिल्ला चिल्लाकर रोएंगे।'' इन दोनों शब्दों की जिनका वह इस्तेमाल करता है दिलचस्प पृष्ठभूमि हैं। ''रोएं'' के लिए यूनानी शब्द वही मूल शब्द है, जो मसीह का इनकार करने के पश्चाप के रूप में पतरस के ''रोने'' को दिखाने के लिए इस्तेमाल किया गया है (लूका 22:62)। ''चिल्लाना'' के लिए मूल शब्द अनुकरणात्मक शब्द (ऐसा शब्द जिसका अर्थ उसकी आवाज़ में ही देता है)। सम्भवतया इस आयत ''चिल्लाना'' के बजाय ''चीखना'' हो सकता है। यह उन लोगों की जिन पर परमेश्वर का न्याय पागलपन से पुराने नियम के नबियों में किए गए संकेत जैसा है (यशायाह 13:6; 14:31; 15:2, 3)। मुझे यह स्पष्ट लगेगा ''आने वाला क्लेश'' न्याय के दिन को कहा गया होगा।

इस पुकार में, याकूब हर धनवान या हर मसीही धनवान को ताड़ना नहीं दे रहा था। वह विशेष वर्ग के लोगों की बात कर रहा है। ऐसा नहीं है कि हर धनवान व्यक्ति ने ऐसे पाप किए हों जो इस वर्ग के लोगों द्वारा ही किए जाते हों। परन्तु पूर्ण रूप में समूह के गुणों के कारण बाइबल के लेखक कई बार धनवानों को बुरे और निर्धनों को भले वर्ग में गिनते हैं। यह ऐसा लगेगा जैसा यीशु ने यह कहते हुए किया था, ''परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है'' (मरकुस 10:25)।

धनवानों के अपराधों की निंदा करना (5:2-6)

इतिहासकारों के अनुसार ऐसा लगेगा कि सम्पत्ति को बाइबल के समय में खाने, पहनने और खर्च करने के तीन मूल ढंगों में दिखाया जाता था। 2 और 3 आयतों में लगता है कि याकूब इन तीनों पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है। आयत 2 में वह कहता है, ''तुम्हारा धन बिगड़ गया ...।'' ''बिगड़ गया'' शब्द का मूल अर्थ ''गल गया'' है और इसके विशेष रूप से खाद्य सामग्री के रूप में हो सकता है। इसका अर्थ इस प्रकार लगता है, ''तुम्हारे पास उससे कहीं अधिक है, जितना तुम इस्तेमाल कर सकते हो, यह मूलतया इस्तेमाल होने से पहले ही सड़ जाता है।''

याकूब कहता है, ''... तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गए'' (5:2)। उनके वस्त्र इतने अधिक थे कि उन्हें कहीं दूर जमा करके रखा गया था और उन्हें कीड़ा लग गया था। यह तो ऐसा है जैसे याकूब पूछ रहा हो, ''कीड़ों को खिलाने का क्या फायदा?''

वह आरोप लगाता है कि ''तुम्हारे सोने-चान्दी में काई लग गई है'' (5:3)। बेशक हम जानते हैं कि सोने और चांदी को काई नहीं लगती या यह सड़ता नहीं; तो हमें इस अर्थ को

प्रतीकात्मक मानना पड़ेगा। यह डांट ऐसे लगेगी कि सोने और चांदी से व्यवहार करने का ढंग उन्हें ऐसे बेकार बना देता है जैसे उन्हें जंग लग गया हो।

आपको विशेष प्रभाव मिलता है कि याकूब उनके धन जमा करने और इस्तेमाल से थोड़ा नाराज़ होने से कहीं बढ़कर है। इस बात पर फिर से ज़ोर मिलता है जब वह कहता है, ''तुमने अन्तिम युग में धन बटोरा है'' (5:3)। याकूब इस बात से परेशान है कि उन्होंने सम्पत्ति ''बटोर ली'' है और यह कि इस ''जमा करने'' से बिगड़ना, नष्ट होना और काई लगने के अलावा कुछ नहीं मिला। जब आप उस सारी भलाई की ओर देखते हैं जो उनकी सम्पत्ति से हासिल की जा सकती थी; तो यह न केवल निरर्थक, बल्कि पापपूर्ण भी है!

याकूब बहुत स्पष्ट हो जाता है। आयत 4 में वह कहता है कि उन्होंने न केवल सम्पत्ति बटोरी है, बल्कि यह भी उस सम्पत्ति का कम से कम कुछ भाग उन मज़दूरों की मज़दूरी न देकर बटोरा गया था। तुरन्त याकूब सांसारिक तथ्यों से उनके आत्मिक महत्व की ओर बढ़ता है। उसने वेतन रोक लेने में असंवेदनशीलता पर रहकर कुछ समय बिताया होगा जिसमें परिवारों को भूखा रहना होगा। परन्तु याकूब के लिए एक ही बात कहनी आवश्यक है। जो कुछ भी हुआ है प्रभु उस सब को जानता है; धोखा उसकी नज़र से बचा नहीं है, बिल्कुल स्पष्ट है कि कटाई करने वालों की पीड़ा सर्वशक्तिमान प्रभु के कानों तक पहुंच गई है।

याकूब अपना तीसरा आरोप आयत 5 में लगाता है: ''तुम पृथ्वी पर भोग विलास में लगे रहे और बड़ा ही सुख भोगा, तुमने इस वध के दिन के लिए अपने हृदय का पालन पोषण करके उसको मोटा ताज़ा किया।'' ये धनवान मसीही विलासिता और असंयम में अपने आपको देने के दोषी थे। अनुवादित क्रिया ''लगे रहे'' का अर्थ है ''आरामदायक जीवन बिताना,'' ''डटकर पीना,'' ''रंगरलियां करना।'' इस शब्द के भीतर ही दुष्टता का संकेत है। बेशक इस आयत में लगेगा कि ''भोगविलास'' और ''सुख भोगना'' दोनों समानार्थक हैं, पर इनके अर्थ में भिन्नता की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। ''भोग विलास'' आसान, कमज़ोर जीवन शैली की बात है जो व्यक्ति को अनैतिकता की ओर ले जाती है। दूसरी ओर, दूसरा शब्द फिज़ूल खर्ची और व्यर्थ असंयम को दिखाता है। याकूब हमें बताना चाहता है कि कि ऐसी जीवन शैली व्यक्ति को वध के दिन के लिए मोटा ताज़ा करती है। यह विचार यिर्मयाह 12:3 की याद दिलाता है, जहां दुष्टों को प्रभु द्वारा काटे जाने के लिए वध के लिए तैयार भेड़ों की तरह निकालने की बात कही गई है। यहां फर्क यह है कि धनवानों ने अपने आपको उस भयंकर दिन के लिए ऐसे मोटे ताज़े कर लिया है जैसे जानवरों को भोजन के लिए तैयार किया जाता है। जिन्हें अन्ततः काटे जाने के लिए तैयार किया जाता है।

आयत 6 में याकूब सबसे गम्भीर आरोप लगाता है: ''तुमने धर्मी को दोषी ठहराकर मार डाला, वह तुम्हारा सामना नहीं करता।'' मेरे विचार से NIV में याकूब द्वारा लगाए गए अभियोग वाली धार नहीं है। वह कहता है कि न केवल वे निर्दोष और धर्मी व्यक्ति पर हमला करने के दोषी हैं, बल्कि वे ऐसे व्यक्ति पर हमला करने के दोषी थे, जो लाचार था और उसने पलटकर वार करने से इनकार कर दिया। धन के लिए उनकी इच्छा इतनी अधिक थी कि दया, प्रेम या भलाई की कोई भी भावना उनके आचरण से बाहर थी। उनका लालच अहाब और ईज़ेबेल की हद तक पहुंच गया था, जिन्होंने इसलिए यिज़्रेली नाबोत की हत्या कर दी थी कि उन्हें उसकी

दाख की बारी मिल जाए (1 राजाओं 21)।

परमेश्वर की चिन्ता को पकड़ना

परमेश्वर की परेशानी वास्तविक धन से नहीं बल्कि धन के प्रति लोगों के व्यवहार से है। यदि हमारी चिन्ता धन और सम्पत्ति को उससे दूसरों के जीवनों को आशीषित करने के लिए इस्तेमाल करने की इच्छा के बिना है, तो याकूब कहता है कि तो हमारी नाव छूट गई है। 2 और 3 आयतों में ''जमा करने'' के लिए डांटने के पीछे यही होता है। मसीही व्यक्ति के लिए परमेश्वर द्वारा इसे दी गई चीज़ों का इस्तेमाल दूसरों को आशीष देने के लिए करना आवश्यक है। इसी लिए रोमियों 12 वाले ''आत्मिक दानों'' में हमें बताया गया है, ''यदि इससे दूसरों की आवश्यकताएं पूरी होती हैं, तो यह उदारता से हो; ...।'' परमेश्वर की शिक्षा उन लोगों के विरुद्ध नहीं है जो धनवान हैं, परन्तु यह उन गलत प्राथमिकताओं के विरुद्ध है जो आम तौर पर धन से आती हैं। ये प्राथमिकताएं और उनके मिल जाने का ढंग इस आयत में मुखर हैं। ये मसीही लोग धन जमा करने के लिए धोखा हैं *और* हत्या करने को तैयार थे। धन जमा करने के उपयोग में उन्होंने अपने आपको अनैतिकता होने तक मिला लिया था।

सारांश

धनवान हों या निर्धन, हमें अपनी आशा उसी पर लगानी चाहिए जो हमें सब कुछ देता है। धन और वह सारा भोगविलास जो इससे मिलता है उसका विकल्प नहीं है जो परमेश्वर हमारे जीवनों में कर सकता है। यीशु के शब्द आज भी सच हैं, ''यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?'' (मत्ती 16:26)।